School of Social Science

Certificate

I hereby declare that the short synopsis " भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता (1900-47 ई0): उ0 प्र0 के विशेष सन्दर्भ में, **(Bhartiya Swatantrata Aandolan Aur Hindi Patrakarita(1900-47 AD): U.P. Ke Vishesh Sandarbh me"**

being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **History** under school of **Social science** of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. / Dr. **Santosha Kumar** has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

13/05/25

(Signature)

(ANURAG)

(En. No.**2100502)**

13/05/2025

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)

(Signature)

(Prof. Santosha Kumar)

Faculty of History

13/05/2025

(Signature)

Prof.Santosha

Kumar

(Director of Concerned School of Studies)

13/05/25

Prof. P. K. Pandey

(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

Scanned by CamScanner

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता (1900-47 ई0): उ0 प्र0 के विशेष सन्दर्भ में

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HISTORY

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

ANURAG

En. NO. 2100502

Under the Supervision of

Prof. SANTOSHA KUMAR

Faculty of HISTORY

School of SOCIAL SCIENCE

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Scanned by CamScanner

ABSTRACT (सारांश)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना जगाने और जनता को संगठित करने में महत्वपूण भूमिका निभायी। ब्रिटिश काल में बिखरी एकता को साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से जोड़ा गया। 1826 में कोलकाता से प्रकाशित उदंत मातण्ड पहला हिन्दी अखबार था, जबकि हिन्दी क्षेत्र से 1845 में बनारस अखबार और 1854 में समाचार सुधावषण (प्रथम दैनिक) ने 1857 के संग्राम में योगदान दिया। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान को बढ़ावा दिया। 1885 में कांग्रेस के गठन के बाद हिन्दुस्तान (मदन मोहन मालवीय) जैसे अखबारों ने राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया। 20वीं सदी में प्रताप (गणेश शंकर विद्यार्थी) ने क्रान्तिकारी विचार फैलाए। 1920 के बाद गांधीवादी प्रभाव वाले हरिजन, नवजीवन और आज ने सामाजिक सुधार और साम्प्रदायिक एकता का संदेश दिया। इन पत्रों ने जनता को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित कर इतिहास रचने में सहयोग किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जहां एक तरफ अहिंसात्मक तथा क्रान्तिकारी गतिविधियों ने एक दिशा प्रदान की। वही हिन्दी क्षेत्र से प्रकाशित हिन्दी समाचार पत्रों ने भी आम आदमियों को स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए प्रेरित किया। जैसा कि महादेवी वर्मा ने कहा – "पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है।"

Keyword (भारतीय, राष्ट्रीय चेतना, हिन्दी, पत्रकारिता, स्वतंत्रता, क्रान्तिकारी)

Scanned by CamScanner

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-6
3	Description Broad Area	6
4	Objectives of the Study	7
5	Research Methodology	7
6	Expected Outcome of the Research	8-9
	References	
	Plagiarism Report	

Scanned by CamScanner

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता(1900-47ई0) : उ0 प्र0 के विशेष संदर्भ में

परिचय (Introduction):

विश्व में जितनी भी महत्वपूर्ण क्रांतियां या स्वतंत्रता के लिए आंदोलन हुए हैं. लगभग उन सभी में देश के नागरिकों के अंदर राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के बहुत सारे माध्यम रहे हैं। इन माध्यमों में से एक प्रमुख माध्यम के रूप में उस समय के प्रकाशित साहित्य तथा समाचार पत्र थे। इन माध्यमों ने देश के नागरिकों के अंदर राष्ट्रीय चेतना का संचार कर उन्हें आंदोलनों के लिए संगठित किया। ब्रिटिश सरकार के अधीन राष्ट्रीय चेतना बिखरी हुई थी। लोगों में सामुदायिक एकता का अभाव था। ऐसे में देशवासियों के अंदर सामुदायिक एकता का भाव जगाने की महती आवश्यकता थी। जिसके लिए आजादी के नायकों ने लोगों में राष्ट्रीय एकता का भाव जागृत करने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य तथा समाचार पत्रों का प्रकाशन कर देशवासियों को भारत के अतीत की गौरवशाली संस्कृति से परिचित कराया।

यह सर्वविदित है की भारत में हिंदी समाचार पत्रों का उद्भव हिंदी भाषी प्रांतों के बाहर हुआ। 1826 में **उदंत मार्तण्ड** के बाद बंगदूत, प्रजामित्र आदि बहुत सारे हिंदी समाचार पत्र कोलकाता से प्रकाशित हुए। इसका कारण यह था की हमारी राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में नवीन चेतना का उदय बंगाल से ही हुआ। भारत ही नहीं समस्त एशिया के प्रथम आधुनिक महापुरुष राजा राममोहन राय ने अपने अभिनव विचारों से सर्वप्रथम बंगाल को ही आलोकित किया। हिंदी क्षेत्र से प्रकाशित पहला हिंदी समाचार पत्र **बनारस अखबार** के नाम से 1845 में बनारस से प्रकाशित हुआ। इसके बाद 1854 में प्रकाशित हिंदी का प्रथम दैनिक समाचार पत्र **समाचार सुधावर्षण** ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग़ाम के दौरान चेतना निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1857 के बाद शुरू हुए सामाजिक व सांस्कृतिक पुनरुत्थान और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के प्रयासों को भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने अपनी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आगे बढ़ाया। 1885 में एक राष्ट्रीय संगठन के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। उसके बाद देशभर के बुद्धिजीवियों के एक मंच पर आ जाने से जो चेतना क्षेत्रीय संगठनों के रूप में बिखरी हुई थी,उसका एक संगठित रूप देखने को मिला। इस दौर का सबसे प्रमुख हिंदी समाचार पत्र 1885 से प्रकाशित **हिंदुस्तान** था। जिसका संपादन 1887 से मदन मोहन मालवीय जी ने प्रारंभ किया था। इसके बाद तिलक के विचारों से प्रभावित बहुत सारे हिंदी समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में योगदान दिया। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक में घटी दो घटनाओं **बंगाल विभाजन तथा भारतीय राजनीति में गरम दल की सक्रियता** ने भारतीय समाचार पत्रों के स्वरूप में अचानक उग्रता ला

Scanned by CamScanner

दी। इसी समय गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा संपादित **प्रताप** समाचार पत्र 1913 में कानपुर से शुरू हुआ जो अपने क्रांतिकारी विचारों के लिए आज भी प्रसिद्ध है।

1920 के बाद भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी के आगमन से गांधीजी के विचारों का प्रभाव उस समय के प्रकाशित समाचार पत्रों पर भी पड़ा। इन समाचार पत्रों के माध्यम से गांधी जी ने समाजिक सुधारों तथा सांप्रदायिक एकता के द्वारा राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का प्रयास किया। उस समय के प्रकाशित मुख्य हिंदी समाचार पत्र हरिजन, नवजीवन, आज, ज्ञानशक्ति, हिंदुस्तानी, आदि ने गांधी जी के विचारों को आम जनमानस तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उपरोक्त विवेचना के बाद यह बात स्पष्ट होती है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जहां एक तरफ आंदोलनकारी, अहिंसावादी तथा क्रांतिकारियों ने सक्रिय भूमिका निभाई। वही हिंदी क्षेत्र से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों ने जनसाधारण को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरित कर आजादी की लौ को प्रज्वलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहां पर ***महादेवी वर्मा*** का यह कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि "*पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है*"।

<u>साहित्य समीक्षा:</u> प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित उपलब्ध कुछ प्रमुख पुस्तकों की समीक्षा:

- **<u>स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता, डॉ अर्जुन तिवारी</u>**

  सात अध्यायों में विभाजित यह पुस्तक स्वतंत्रता सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का जीवंत अभिलेख है। इस पुस्तक में आज, रणभेरी, शंखनाद, स्वदेश, समय, ज्ञानशक्ति, कल्याण, विभूति, जीवन, विजय, और जासूस जैसे 114 क्रांतिकारी समाचार पत्रों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। तथा भारतीय स्वाधीनता संग्राम को गति प्रदान करने वाले तत्वों पर ही प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में विगत 150 वर्षों की राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक गतिविधियों के परिपेक्ष्य में हिंदी पत्रकारिता की उद्भव और विकास का प्रमाणिक इतिवृत्त है। इसमें प्रखर और क्रांतिकारी पत्रों के चित्र एवं बलिदानी पत्रकारों की जीवन गाथा का भी वर्णन है।

  इस पुस्तक में पूर्वी उत्तर प्रदेश से प्रकाशित समाचार पत्रों द्वारा राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का उल्लेख है लेकिन हिंदी क्षेत्रों से प्रकाशित अन्य समाचार पत्रों का उल्लेख नहीं है।

- **<u>भारतेंदु युगीन हिंदी पत्रकारिता, कुश चतुर्वेदी</u>**

  यह पुस्तक 6 अध्यायों में विभाजित है। इस पुस्तक में हिंदी समाचार पत्र के आरंभ से लेकर 1900 तक के समाचार पत्रों की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति का विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया गया है. इसमें 1867 से 1900 के बीच प्रकाशित समाचार पत्र पत्रिकाओं के द्वारा समाज में फैली कुरीतियों बालविवाह, विधवाविवाह, सतीप्रथा, बहुविवाह आदि का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता था। इसके बारे में विस्तार से बताया गया है। इस दौर के समाचार पत्रों ने इन सुधारों के लिए जनसाधारण की चेतना को कैसे जागृत

Scanned by CamScanner

किया, इसका भी उल्लेख है। इस पुस्तक के अध्ययन के उपरांत हम यह जान सकेंगे की राजनीतिक सुधारों के पहले सामाजिक सुधार कितने आवश्यक थे।

इसमें सिर्फ भारतेंदु युग के दौरान प्रकाशित समाचार पत्रों का विश्लेषण है। उसमें मुख्यत: सामाजिक सुधारों पर जोर दिया गया है चेतना निर्माण की बात ना के बराबर की गई है

- **पत्रकारिता का इतिहास, एन सी पंत**

इस पुस्तक में कुल 11 अध्याय हैं इसमें समाचार पत्रों के प्रमुख उद्देश्य, समाचार पत्रों की प्रवृत्तियां, समाचार पत्रों के उद्भव और विकास। समाचार पत्रों का विस्तार पूर्वक काल विभाजन, स्वाधीनता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में समाचार पत्रों का योगदान, समाचार पत्रों के प्रकाशन शुरुआत से लेकर 1947 तक हर प्रतिवर्ष कितने समाचार पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हुए है, उनकी भी संक्षिप्त और क्रमबद्ध व्याख्या की गई है।

इसमें सिर्फ समाचार पत्रों के संबंध में संक्षिप्त विवरण दिया गया है उनके बारे में विस्तृत जानकारी नहीं है तथा उनके स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान का भी उल्लेख नहीं है।

- **पत्रकारिता एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास, डॉ अर्जुन तिवारी**

यह पुस्तक 7 अध्याय में विभाजित है। इसकी शुरुआत में समाचार पत्रों को एक सक्षम माध्यम के रूप में बताया गया है। पत्रकारिता का दायित्व तथा उद्भव; राष्ट्र, राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीयता की विभिन्न अवधारणाओं की विवेचना की गई है। राष्ट्रीय चेतना का अभ्युदय तथा राष्ट्रीय चेतना के क्रमिक विकास के अंतर्गत 1857-1947 के बीच के समय को तीन भागों में बांटा गया है: उद्बोधन काल(1826-1884) जागरण काल(1885-1919) तथा क्रांति कॉल(1920-1947)। इसके अतिरिक्त इस दौर के क्रांतिकारी पत्र-पत्रिकाओं का भी उल्लेख किया गया है। अंतिम अध्याय में स्वतंत्रता के बाद की पत्रकारिता में आए बदलाव का उल्लेख है।

इसमें से सिर्फ प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों द्वारा राष्ट्रीय चेतना के निर्माण के संबंध में चर्चा है जबकि हिंदी क्षेत्र के बहुत सारे समाचार पत्रों का उल्लेख नहीं है।

- **स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास, मदनलाल वर्मा**

यह पुस्तक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रकाशित समस्त क्रांतिकारी पत्र-पत्रिकाओं का अद्वितीय संकलन है। यह पुस्तक तीन खंडों में विभाजित है। इस पुस्तक में क्रांतिकारी विचारों के बारे में विस्तार से बताया गया है। क्रांतिकारियों ने जनसाधारण के हृदय में कैसे अपनी जगह बनाई । इसमें यह भी बताया गया है कि क्रांतिकारी आंदोलन सिर्फ बम और बंदूक पर ही आधारित नहीं था। क्रांतिकारी समाचार पत्रों की शुरुआत वारीन्द्र घोष ने युगांतर नामक समाचार पत्र से की थी। इस पुस्तक के माध्यम से यह भी

Scanned by CamScanner

भ्रम दूर होता है की क्रांतिकारी गतिविधियां सिर्फ व्यक्तिगत नहीं थी बल्कि वह भी आम जनमानस से संबंधित थी।

इसमें सिर्फ क्रांतिकारी साहित्य का उल्लेख है हिंदी क्षेत्र के अन्य समाचार पत्रों का नहीं।

- **<u>हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम, डॉ वेद प्रताप वैदिक</u>**

इस पुस्तक मे हिंदी समाचार पत्रो की लेखन शैली, उनमें संपादन के विविध आयाम, शीर्षक देने से संबंधित जानकारी, संपादकीय पृष्ठ लिखने के तरीके, घटनाओं को समाचार का स्वरूप देने के विविध तरीके, तथा पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूपों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त पत्रकारिता से संबंधित कानून, समाचार पत्रों के संबंध में बनाए गयी समितियां, विभिन्न समाचार पत्रों के संगठन तथा उनके द्वारा संचालित किए गए आंदोलन आदि की भी जानकारी विस्तारपूर्वक दी गई है। प्रारंभिक हिंदी पत्रकारिता से संबंधित तथ्य, पत्रकारो की भाषा शैली, हिंदी के पहले हिंदी समाचार पत्र से संबंधित विवादों का प्रमाण पूर्वक खंडन, तथा हिंदी समाचार पत्रों का विकास क्रम भी बताया गया है।

इसमें मुख्यतः समाचार पत्र लेखन तथा उससे संबधित विभिन्न पहलुओं का उल्लेख किया गया है लेकिन हिंदी क्षेत्र के समाचार पत्रों के स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित किसी महत्वपूर्ण बात पर विशेष बात नहीं की गई है

- **<u>हिंदी पत्रकारिता, डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र</u>**

यह पुस्तक 5 खंड तथा 16 अध्यायों में विभाजित है। इस पुस्तक में पहली बार यह तथ्य प्रस्तुत किया गया की हिंदी पत्रकारिता की कहानी ही भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी है। यह पुस्तक कलकत्ता से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों को केंद्र में रखकर लिखी गई है। इसमें प्रारंभिक हिंदी पत्रकारिता और उसकी मूल चेतना को पूरी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के उन्नायक ही हिंदी पत्रकारिता के उन्नायक है।

इस पुस्तक में कोलकाता को हिंदी समाचार पत्रों की जननी के रूप में स्थापित करने की कोशिश की गई है, जबकि हिंदी क्षेत्र से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों को उपेक्षित किया गया है।

- **<u>1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता, प्रो0 नीरज कर्णसिंह और यासिर अराफात</u>**

इस पुस्तक में 1857 से लेकर 1947 तक के समाचार पत्रों से संबंधित 23 शोध पत्र अध्याय बार प्रकाशित हैं। इनमें से कुछ प्रमुख अध्यायों के अंतर्गत अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति की पृष्ठभूमि में हिंदी समाचार पत्रों की भूमिका, स्वाधीनता संग्राम में समाचार पत्रों

Scanned by CamScanner

की भूमिका, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तथा हिंदी समाचारपत्रों का काल, समाचार पत्रों के प्रकाशन को प्रतिबंधित करने से संबंधित अधिनियम का भी उल्लेख है तथा समाचार पत्रों का युगानुरूप विभाजन भी किया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन के बाद हमें यह जानकारी प्राप्त होती है की 1857 की क्रांति के दौरान तथा उसके बाद राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में किन समाचार पत्रों ने योगदान दिया है तथा किन संघर्षों का सामना किया है।

इस पुस्तक में मुख्यतः 1857 के पूर्व तथा बाद के समाचार पत्रों का ही उल्लेख है लेकिन उसके बाद के समाचार पत्रों के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती।

- <u>हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास ,डॉ अर्जुन तिवारी</u>

इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है की पत्रकारिता संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी है। जन भावना की अभिव्यक्ति भी है। इसमें 752 दुर्लभ हिंदी समाचार पत्रों के संपादक, प्रकाशन वर्ष तथा प्रकाशन स्थल के बारे में विस्तार से बताया गया है। राष्ट्रीय परंपराओं, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आर्थिक परिवेश तथा युगबोध के आधार पर हिंदी समाचार पत्रों का काल विभाजन किया गया है। 1826-2000 तक के हिंदी समाचार पत्रों का उल्लेख किया गया है। आठ अध्यायों में विभाजित इस पुस्तक के अंतिम अध्याय में हिंदी समाचार पत्रों के प्रमुख संपादक तथा 21 वीं सदी में हिंदी समाचार पत्रों के स्वरूप में आए परिवर्तन के बारे में भी बताया गया है। इसमें स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित समाचार पत्रों काशिफ सिर्फ क्रमवार चर्चा है उनका चेतना निर्माण संबंधी विश्लेषण नहीं किया गया

- <u>राष्ट्रनिर्माताओं की पत्रकारिता, डॉ कृपाशंकर चौबे</u>

इस पुस्तक में देश के शीर्षस्थ स्वतंत्रता सेनानियों तथा राष्ट्रनिर्माताओं बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय, अबुल कलाम आजाद, डॉ० भीमराव अंबेडकर, सुभाषचंद्र बोस तथा राममनोहर लोहिया आदि के द्वारा संपादित तथा प्रकाशित समाचार पत्रों के संबंध में शोधपरक तथ्यों के साथ लिखा गया है। राष्ट्रनिर्माताओं की पत्रकारिता के मर्म और कर्म, उनकी पत्रकारिता की विरासत तथा गौरवशाली अतीत से परिचय कराया है। पत्रकारिता के स्वरुप को गढ़ने में इन सभी भूमिका का भी उल्लेख किया है।

इसमें सिर्फ कुछ प्रमुख राजनेताओं द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रों का ही उल्लेख है जबकि हिंदी क्षेत्र से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों के बारे में कोई बात नहीं है।

<u>समस्या कथन</u>:

प्रस्तावित शोध विषय के अंतर्गत उपलब्ध संबंधित पुस्तकों के अध्ययन के बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय चेतना निर्माण में हिंदी क्षेत्र के प्रमुख समाचार पत्रों की भूमिका के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता महसूस हुई। आज जब हम आजादी का अमृत

Scanned by CamScanner

महोत्सव मना रहे हैं तो यह बहुत जरूरी हो जाता है की स्वतंत्रता आंदोलन की क्षेत्रीय तथा अपने क्षेत्रीय स्तर पर चेतना जागृत करने वाले संचार के साधनों पर एक बार पुनः दृष्टि डालें। यह जाने जानने की कोशिश करें की संचार के उन साधनों ने जनसाधारण तक अपनी बात किस तरह पहुंचाई होगी। मौजूदा साहित्य में प्रमुख नायकों द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाशित समाचार पत्रों के योगदानों की चर्चा है जबकि क्षेत्रीय स्तर पर आजादी के नायकों के संदेशों को प्रसारित करने वाले समाचार पत्रों का आज कोई नाम भी नहीं जानता है सिर्फ पुस्तकों की एक दो लाइनों में सिमट गए। उत्तर प्रदेश से प्रकाशित ऐसे समाचार पत्र पत्र को प्रकाश में लाना , जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में मजबूती प्रदान की है। इसके साथ ही 21वीं सदी में स्वतंत्रता आंदोलन के समय निर्मित राष्ट्रीय चेतना के तत्व की प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।

शोध प्रश्न :

- वे कौन से तत्व थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी समाचार पत्रों को महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया?
  - स्वतंत्रता आंदोलन के समय राष्ट्रीय चेतना के विकास की आवश्यकता क्यों पड़ी?
  - उस समय उत्तर प्रदेश से प्रकाशित हिंदी समाचार पत्रों ने किस तरह लोगों के भीतर राष्ट्रीय चेतना का निर्माण किया?
  - वह तत्व जिन्होंने समाचार पत्र निकालने के लिए प्रेरित किया?
  - टेक्नोलॉजी के सहारे बदलती दुनिया में राष्ट्रीय चेतना के निर्माण की आवश्यकता पूर्ति करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन की पत्रकारिता के कौन से तत्व सहायक हो सकते हैं?

उद्देश्य :

- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय चेतना निर्माण में हिंदी पत्रकारिता के योगदान का विश्लेषण करना।
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी क्षेत्र के समाचार पत्रों की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन करना।
- राष्ट्रीय चेतना के निर्माण और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अवरोध उत्पन्न करने वाले तत्व एवं उनका निराकरण करना।
- शोध की प्रासंगिकता

शोध प्रविधि : प्रस्तावित शोध कार्य हेतु ऐतिहासिक, शोध प्रविधि का सहारा लिया जाएगा। मुख्यतः द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तकालयों एवं संबंधित विषय विशेषज्ञों /विद्वानों से चर्चा तथा अभिलेखागार से शोध सामग्री का संकलन किया जाएगा।आवश्यकता पड़ने पर

Scanned by CamScanner

प्राथमिक स्रोत तथा आईसीटी(ICT) के माध्यम से भी शोध सामग्री का संकलन किया जाएगा।

संभावित अध्याय योजना :

- **प्रस्तावना**
- **अध्याय प्रथम** : उत्तर प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता का आरंभ और राष्ट्रीयता का विकास प्रारंभ से 1922
- **अध्याय द्वितीय** : असहयोग आंदोलन के बाद उ० प्र० की हिन्दी पत्रकारिता का उत्तरोत्तर विकास 1922 31
- **अध्याय तृतीय** : समझौते की राजनीति और गोलमेज सम्मेलनों के दौरान उ० प्र० की हिन्दी पत्रकारिता
- **अध्याय चतुर्थ**: स्वतंत्रता की ओर अग्रसर भारत और उ० प्र० की हिन्दी पत्रकारिता
- **अध्याय पंचम**: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का दौरान उ० प्र० से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी समाचार पत्र और उनके संपादकों का संक्षिप्त परिचय
- **निष्कर्ष**

शोध के अपेक्षित परिणाम(Expected Outcome of the Research):

प्रस्तावित विषय से संबंधित उपलब्ध पुस्तकों के अध्ययन के बाद यह आवश्यकता महसूस हुई की, ब्रिटिश शासकों ने भारत पर अधिकार करने के समय किन सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियो का लाभ उठाया था ? किन सामाजिक कुरीतियों तथा भेदभाव ने उन्हें भारत पर शासन करने के लिए प्रेरित किया था? उस समय हमारी राष्ट्रीय चेतना किस स्थिति में थी. हिंदी समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में किस तरह योगदान दिया? वे कौन से तत्व थे जो राष्ट्रीय चेतना के विकास में सहायक थे। ऐसे कौन से कारण थे जिन्होंने भारतीय राजनेताओं को समाचार पत्र निकालने के लिए प्रेरित किया ? आंदोलन के समय हिंदी क्षेत्र से प्रकाशित समस्त हिंदी समाचार पत्रों के एक समग्र मूल्यांकन करने की आवश्यकता है वर्तमान संदर्भ में स्वतंत्रता के समय निर्मित राष्ट्रीय चेतना कि कौन से तत्व सहायक हो सकते हैं? इन सभी बिंदुओं को एक साथ समग्र अध्ययन की आवश्यकता है।

उपरोक्त पुस्तकों की समीक्षा के उपरांत यह निश्चित हो गया कि मेरे विषय पर शोध करने के उपरांत कुछ महत्वपूर्ण तथा नवीन जानकारियां प्रकाश में आएंगी जो भविष्य में लाभप्रद साबित होंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Scanned by CamScanner

गुप्ता. मन्मथनाथ.(1939) *भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास* नई दिल्ली, शहीद ग्रंथ माला।

भट्ट. गौरीशंकर (1968) *भारतीय पुनर्जागरण प्रणेता तथा आंदोलन* देहरादून, साहित्य सदन।

शर्मा .डॉ रामविलास. (1977). *महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नव जागरण*, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

द्विवेदी. डॉ0 कृष्णदत्त. (1981) *भारतीय पुनर्जागरण और मदन मोहन मालवीय*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

तिवारी. डॉ0 अर्जुन. (1982) *स्वतंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

वाजपेयी. अंबिका प्रसाद. (1986) *समाचार पत्रों का इतिहास*,वाराणसी, ज्ञान मंडल प्रकाशन।

लाल. बंशीधर. (1992). *हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास*,पटना, अनुपम प्रकाशन।

पांडेय, डॉ0 पद्माकर. (1993) *हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आंदोलन*, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा।

तिवारी. डॉक्टर अर्जुन .(1998)स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पंडित दशरथ प्रसाद द्विवेदी, वाराणसी ,विश्वविद्यालय प्रकाशन।

तिवारी, डॉ0 अर्जुन.(2000) *पत्रकारिता एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास*, इलाहाबाद, जय भारती प्रकाशन।

Jayapalan N.(2001).Journalism, New Delhi, Atlantic Publication and distributors.

पंत. एन. सी. (2002). *पत्रकारिता का इतिहास*, नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।

सक्सेना, प्रदीप. (2005) *राष्ट्रीय नवजागरण और इतिहास चेतना*, रामनगर जबलपुर, पहल प्रकाशन ।

वैदिक. डॉ0 वेद. प्रताप. (2006). *हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम* ,नई दिल्ली हिंदी बुक सेंटर ।

वर्मा, डॉ0 मदनलाल.(2006). *स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास*, नई दिल्ली ,प्रवीण प्रकाशन।

Bakshi Dr. S.R.(2006),History and Development of Communication, New Delhi, Mahaveer &Sons.

पुरोहित, डॉ. प्रकाश.(2007) राजस्थान में स्वतंत्रता संग्रामकालीन पत्रकारिता, जयपुर,राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकैडमी।

Srivastava, Kamal S.(2007)Principal of Indian journalism and Mass communication, Ranchi. A.P.H. Publishing Corporation.

Phase SP.(2008),Media and Journalism Ethics, Jaipur. ABD Publication.

Scanned by CamScanner

Wimmer, Roger D. and Dominick Joseph R.(2009), Mass Media research, New Delhi, Wadsworth Cengage Learning.
जैन. डॉ0 पवन, कुमार.(2011), *विदेशों में हिंदी पत्रकारिता*,नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन।
मिश्र. डॉ0 कृष्णबिहारी. (2019), *हिंदी पत्रकारिता*, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ।
तिवारी. डॉ0 अर्जुन. (2022), *हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास*,नई दिल्ली,वाणी प्रकाशन।
सिंह, प्रो0 नीरज कर्ण और अराफात, यासिर.(2022) 1857 के *प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता*, नई दिल्ली,प्रभात पब्लिकेशन।
चौबे. डॉ0 कृपाशंकर.(2022), *राष्ट्रनिर्माताओं की पत्रकारिता* मुंबई, प्रलेक प्रकाशन।

Scanned by CamScanner

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Submission Information

Author Name	Anurag
Title	Bhartiya Swatantrata Aandolan Aur Hindi Patrakarita (1900-47 AD) : U.P. Ke Vishesh Sandarbh Me.
Paper/Submission ID	3608222
Submitted by	santoshauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-13 13:50:55
Total Pages, Total Words	14, 4192
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **0 %**

Exclude Information

Quotes	Not Excluded
References/Bibliography	Not Excluded
Source: Excluded < 14 Words	Not Excluded
Excluded Source	**0 %**
Excluded Phrases	Not Excluded

Database Selection

Language	Non-English
Student Papers	Yes
Journals & publishers	Yes
Internet or Web	Yes
Institution Repository	Yes

Scanned by CamScanner

DrillBit

DrillBit Similarity Report

0	1	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	translate.google.com	<1	Internet Data

Scanned by CamScanner